ॐ

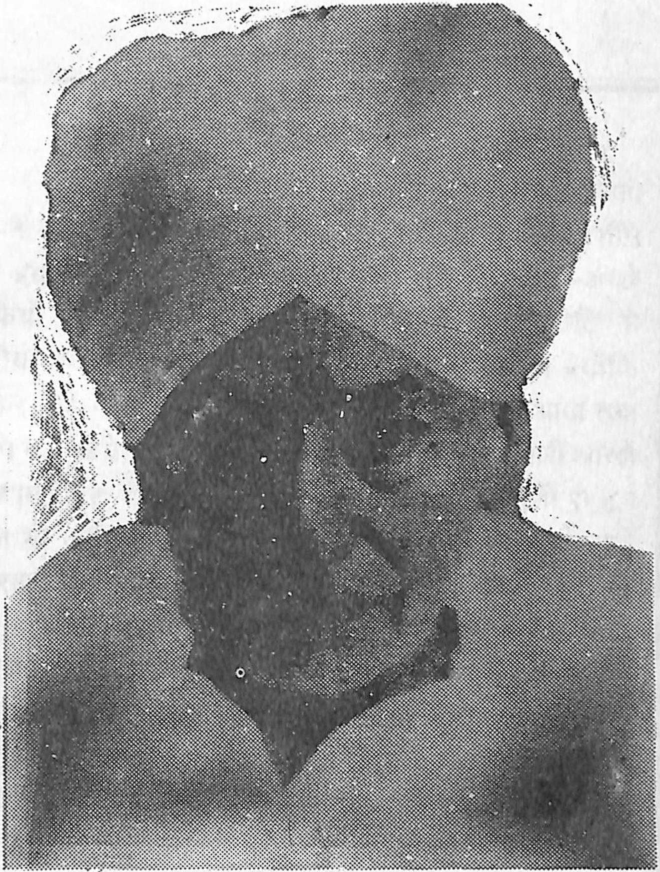
भास्कर प्रकाश



संपादक

स्वामी श्री आफताब जी
कारिहामा निवासी (कश्मीर)

धर्मार्थ्य वितरण



संपादक

स्वामी श्री आफताब जी
कारिहामा निवासी (कश्मीर)

धर्मार्थ्य वितरण

समस्त जगत का अन्धकार क्षणों में दूर हो जाता है। अतः उक्त महानुभाव के रचना–पात्र का नाम भी मैनें "भास्कर प्रकाश" रखना उचित समझा।

आपके गुरु महाराज एक महानुभावए बुद्धिजीवी तथा प्रतिभाशाली महापुरुष, चींक्राल मुहला श्रीनगर के प्रवासी थे। उनका पूजनी नाम श्री गोबिंद जी तलाशी था।

स्वामी आफ़ताब जीं अल्पायु से ही अर्थात सात साल की अवस्था से ही सांसारिक बंधनों से परे पहकर परम–परमेश्वर की भक्ति में लीन हुए। आप ब्रह्मचारी–गृहस्थी सन्त थे। आपकी काव्य रचना में वैदिक तथा पौराणिक विचारदाराओं का आभास है।

अपनी ओर से मैनें आपके काव्यामृत को क्रम का पूर्ण प्रयत्न किया।

आशा है कि सहदय–जन आपके काव्य में अद्वैत ब्रह्मवाद, अखण्ड ब्रह्मवाद, काव्य सूक्तियों के वैचित्र्य, चमत्कार को उत्पन्न करने वाली उपमाओं एवं अन्य अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग का स्वयं अनुभव करेंगे और आवश्य ही उनसे प्रभावित होंगे।

आपकी रचनाओं का कुछ भाग अभी तक हस्त–लिखित नहीं हो सका है। यदि दैव ने चाहा तो अगले प्रकाशन में प्रकाशित करने का प्रयत्न करूँगा।

— हरी कृष्ण कौल
बी. ए.

ॐ श्री गणेशाय: नम:

भजन नम्बर 1

गुडन्य तस आदि देवस कर नमस्कार।
विनायक सिद्धि दाता विघ्न हरतार।।
छु गणपत सारिकुय सर्ताज वुोनमुत।
छु गणपत सारिकुय महाराज वोनमुत।।
छि कर्मन सारिनय पूज़ा तसन्ज़ आदि।
छि धर्मन सारिनय व्याधि करान बाद।।
करिथ आरम्भ सोरन इम नित्य तसुन्द नाव।
गछ़यक सिद्ध कामना विन्घुक छु अभाव।।
सु प्रिय वर दैयि सुन्द गज़मोख तरन तार।
इछ़ा सन्तान सती हुन्द छु मोखतार।।
सु सरदार देवनय हुन्द सरकार मानुन।
ब दरबार तस छु सत्कार पार जानुन।।
विनायक छु सु नायक नित्यं सहायक।
सु वरदायक तोतः करनस लायक।।

सति सत माजि ह़ोन्दि पास कर म्य दासस।
करित वास आस भास व्यसवुन विकासस।।
चतुर दल द्वार मूलाधार कुय ध्यानं।
त्रिपुर वोलंगित छु चूरिम तीत रोज़ान।।
तवै ननि नोन भास्कर पान पान वोलसान।
नित्य आनन्द मय निर्द्वन्द शोभान।।

भजन नम्बर 2

आदि देव कारण व्याधि निवारो।
सिद्धि दातारो बुविनय जय।।
एक दन्त वक्र तुन्ड सर्व आधिकारो।
गज मुख दारो अज़ अभय।
उमा नन्दन गण सरदारो।। द्धि॰।।
चतुर दल बल वीर मूलाधारो।
नित्य पहरदारों ह्यत वरा अभय।
अस्त्र शस्त्र जोरा वारो।। सि॰।।
मन्त्र नायक सहायक उधारो।
कर परम पारो विनायक सिद्धय।

हे वरदायक बड़ि सरकारो।। सि०।।

कृष्ण पिन्गल धूमर वर्ण शशि शिखरो।

नागेन्द्र धारो छुक परम परय।

बाल चन्द्र लाल माल नाल मुखतहारो।। सि०।।

विकट वर्ण सूर्य चन्द्र तारो।

त्रिनेत्र धारो स्वर्णमय।

विघ्न राज यज्ञ देव गगन आधारो।। सि०।।

माजि हन्द राज ज़ाद हाताजदारौ

ईश्वर प्यारो हे गणेश्वरय

रक्त वर्ण शक्ति प्रिय भक्ति सहारो।। सि०।।

पास कर भास नोन कास अन्धकारो।

कर हितकारो दासन जय।

सास भास्कर छुय तोतः कारो।। सि०।।

भजन नम्बर 3

अन्धकारकि इन्दु शिव शान्त सत् गुरु।

परापर परम धाम राम राम परयो।।

आदि देव गोबिन्द नाद बिन्द अक्षर।

निर्द्वन्द निष्काम राम राम परयो।।

ही दयि अद्वय दयि दयायि किन चाव।

प्रेम मस की जाम राम परयो

तमि मस रस रस लगहय नावस।

हावस सुबह शाम राम राम परयो।।

इन्दु रव वोन्दि भास अज्ञान घट कास।

भास मन्ज ख़ास व आम राम राम परयो।।

श्याम रंग भोम्बरो गूँ गूँ चानि स्यूत!

ही तनि चज़्यम हाम राम राम परयो।।

अनुग्रह पूर कर संकट दूर कर।

चलनम लोक पाम राम राम परयो।।

शक्ति पात सूत्यन मुक्त दात सान्य खेत।।

पापनाव हचि त हाम राम राम परयो।।

मुग्ली वायवनि अनाहृत बाजि बोज़।

दर्द सोज स्वर साम राम राम परयो।।

आम्य ज़ाम्य दुध प्याल भर्य भर्य थावय।

च्यख़ना दाम दाम राम राम परयो।।

कर गन्डिथ बर तल छुस ब दिम् वरदान।

धर्म अर्थ मोक्ष काम राम राम परयो।।
अज्ञान घट कास भास्कर नोन भास।
अज़पा प्राणायाम राम राम परयो।।

भजन नम्बर 4

ह्यस के आगर मस के सागर।
हे सत् गुरु रस् रस् मस म्य चाव।।
ह्यस कुय ह्यस दिम मस कुप मस दिम।
मस्तसन तमि मस ह्यस व्सराव।।
अन्द्रिमि तुन्द्रय प्राण तावनावित।
चन्द्रम मण्डल अमृत चाव।।
दम दम ओम कुय पन खारनावित।
इन्द्राज़स म्य निन्द्रि वुज़नाव।।
हमस द्वार मान्सर वार फोलनावित।
सहस्र दल डल योग गत प्रावनाव।।
कन्धापोरय शशि त रव सावित।
शिव गाशि केशव शिव वुछनाव।।
नव वय द्वारन दाह मिलनावित।

द्वाद शान्त मण्डल काह मुछनाव।।
गग़नस हेरि शेरि प्राण फेरनावित।
ज़ीर बम सीर नाद बिन्द वुज़नाव।।
शाह परवय सूत्य पान वुफनावित।
छ़िपि छ़ारि सोहम पान प्रज़नाव।।
ज्योति विभूति नन्य प्रावनावित।
आप्त काम प्राप्त म्यति कानाव।।
आकाश पाताल छ़ाल फेरनावित।
ज़ेरि ज़ेरि हेरि बोन ईक बनाव।।
दिक पाल नव ग्रह दास भाव प्रावित।
सास भास्कर ननि नोन भासनाव।।

भजन नम्बर 5

श्याम कामकि सुन्दर श्याम राम निष्काम श्रीधरै।
करुणाकर दुरिताहर वरदायक सत् गुरै।।
नन्द नन्दन बन्धन कास्तम त निर्बन्धन निर्भरै।
निर वासन गरुड़ासन शेष शयन ईश्वरै।।

विश व्यापक हे विशमभर बर दायक सत् गुरै।।
भक्त रक्ष हे शक्तीशवर मुक्त मुक्त कर हे मुखतसरै।
हे पुखत कार प्ार है च्यै मुखतहार भक्तच्यन तार भवसरै।
चानि बरतल त्रावित छुस ब लर वर दायक सत् गुरै।।
आदि अन्त रसति नाद बिन्द ओंकार इन्द रव सन्दि सुन्दरै।
देह मन्दिर पूज़हत भोगेन्द्र योगेन्द्र ब्रह्म रन्ध्रै।
दशम द्वार तर द्वादणान्त अन्तर चर दायक सत गुरै।।
देव ब्रह्मा गन्धरव कारण ध्यान धारनायि तत्परै।
सूर्य चन्द्रम आकाश तात अनुशासन प्रकरै।
दयि भय चोन मानित सुरासुर वर दायक सतगुरै।।
गत चान नित्य अपारन्गात दजवन तति शाह परै।
बल वीर ईरः धैर छुनः वीरन सीर कुस वन निबरै।
ऋषि क्रेशाव डेशिहोन आश्चर्य वर दायक सत गुरै।
धर कथ्ह ध्यान मनकुय अगोचर वनि वाणी सु बनि विस्मरै।
ह्यास त होश बुज़ तोर कोर पोशान वुछहोन ब्राह्म नैत्र।
ज्ञान दृष्टि दिम पान च्यै हरी हर वरदायक सत् गुरै।।
निष्कारण चय सर्व कारण त्रियि कारण अन्तरै।
दश अवतार दारित चय हिश रस्ति निश भास निबर अन्दरै।

सास भास्कर भासवुन छु भास्कर वरदायक सत् गुरै।।

भजन नम्बर 6

योग धारणायि प्राण सन्धोरुम।

ध्यान धोरुम शिव शम्भू।।

शिव रागुक भस्म तनि पोरुम।

ज़ागि ज़ोगुम करित वेराग।

भाव नाग राद प्रेम पोन्य फ्योरुम।। ध्यान०।।

देह अभिमान गयव ज़न कोरुम।

अहंकार ज़ोलुम रत्न द्वीप।

मोह अन्धकार घटि गाश होरुम।। ध्यान०।।

अनहत तारि स्वर चलि चोरुम।

ज़ीर भम द्राव नाद बिन्द साज।

इन्द रव वुन्दि अमृत होरुम।। ध्यान०।।

नित्य अनित्य तोस् ब्यन चोरुम।

रुम रुम सुय ओस रमान।

ओं कुय पन दम दम खोरुम।। ध्यान०।।

शून्यहुक बिनाह शिव विस्तोरुम।

वुश्चोरुम क्षण क्षण ती।

काम क्रोध लोभ मुह मद मोरुम।। ध्यान॰।।

तल प्यट सुय मूल वुश्चोरुम।

होस्त मस वाल करुम बन्द।

मूलाधार द्वादशान्त तोरुम।। ध्यान॰।।

गाट ऋवित सुय गाट जोरुम।

दय यस दियि तस चलि ग्राव।

शिव मालन्य शिव हंस दोरुम।। ध्यान॰।।

सुबह शाम सुप्रभात गोरुम।

छ़ोरुम मन्ज़ आम् खासन्। ध्यान॰।।

सास भास्कर पान विच़ोरुन।। ध्यान॰।।

भजन नम्बर 7

पोत जूवे मोत वुज़नो वुम।

ललनोवुम नारायण।।

प्रिय तमसिनज़ि हीय तन नव

पोश वथरोस प्यठ गोशन।

रोषि ययिना होश रावरोवुम।। लल०।।
बाल पान तस पथ रावरोवुम।
हाल कमि सुय नाल रट होन।
शिव शम्भो शुन्य बोलनोवुम।। लल०।।
काम देवस नाम लेख नोवुम।
पाम थविनम कर डेशन।
रुम रुम सुय राम रमनोवुम।। लल०।।
दार पथ दरि वार वुछनोवुम।
जूनि छोडुम मन्ज तारकन।
मारकन मन्ज़ नाल मुचरोवुम।। लल०।।
लुलि मन्जुलि लोल ललनोवुम।
बोल नोवुम सुबह शामन।
च़ीर सोवुम सुलि वुजनोवुम।। लल०।।
ज़ीर भम कुय सीर वुजनोवुम।
फेरनावुम तति हेरि बोन।
वेरि तससन्जि शेरि वातनोवुम।। लल०।।
ज़्यव नार् स्यूत वार् छलनोवुम।
तब लोलन नार शोलान।

अछिव बूजुम कनव वुछिनोवुस।। लल०।।
कन्द नाबद आरदनोवुम।
फन्ध करित यूरि अन्तन।
ऋन्द लोबमुत वोन्द फुलनोवुम।। लल०।।
हंस द्वारै वार् पान परजनौवुम।
प्रारि प्रासेस राम रादन।
ब्रह्म सर पान सर करनोवुम।। लल०।।
अथ वासय रास खेलनोवुम।
श्वास ओश्वास नोन छु भासन।
सास भास्कर विकास भासनोवुम।। लल०।।

भजन नम्बर 8

परि पूर्ण नूर भीरमुतये।
सुर मोतये आंगन चाव।
शान्त निर्मल भ्रान्त कासवुनये
भासवुनये सास रव जन।
शिव शम्भो अलख बोलमुतये।। सू०।।

नङ्ग भस्मा अङ्गन मोल मुंतये
हटि भुजंग जठि तस छि गंग।
ड्यकि चन्द्रम ट्यकि जोलमुतयें।। सू०।।
अलक बूजित तिम गूरबाये
जसोदाय सांन करान विनती।
धन द्यारौ भोरनस फोतये।। सू०।।
घ्यौ दुध थ्यनि आरद मोतये
कन्द नाबद सु वोन्द सान।
ह्यत जसोदा करान ब्रोन्ट पोतये।। सू०।।
जोगि दोपनक योगी ज़ानिव।
भोग त्रावित छुस निराहार।
काम दीवस भस्म कोरमुतये।। सू०।।
लोभ क्षौभ नहीं नै अभिलाशा।
आशा यह एक मन में।
कृष्ण दर्शन करनि आमुताये।। सू०।।
राधेश्याम को बोलो आदेश।
ईश जोगी वेष धर के।
तमि अभिप्राय योर अमुतोये।। सु०।।

बूज़ जसोदायि ह्यस विसरानी।
सानी सान विनथा बोज़।
ख़ोचि बालुक छु रात ज़ामुतये।। सू०।।
चानि दर्शन गछि तस छाये।
राय क्या छय माय भरहस।
अघूर भैरव फेर गछ़ पोतये।। सू०।।
जोगि वोननस छंख अनज़ानी।
मान योगियन हुन्द सरदार।
राजि ज़गि हुन्द माजि जामुतये।। सु०।।
सृष्ट स्थ्यत लय अनुग्रह बियि दण्ड।
अन्द ब्रह्माण्ड नित्य करबुन।
शेष शाये ईश आमुताये।। सू०।।
सुख मुख सुय दुख दादि कासान।
भासान ज़न सार् निशि ब्योन।
नोन अनुग्रह छु बन्योमुतये।। सू०।।
दुष्ट गालिन श्रेष्ट छिस पालन।
भूमि वालुन छुस वोन्य भोर।
क्ाल कालन पानय पोलमुतये।। सू०।।

भार जगि हुन्द वार छुस वालुन।
गालुन छुस दुष्ट सम्बन्ध।
पालन कर्म वेदव वोनमुतये।। सू.।।
त्रन भवनन भय सुय कासान।
भासान सुय निथननि नोन।
मूल ज़गि हुन्द ब्योल वोवमुतय।। सू.।।
योग मायायि समयोग करिथय।
प्रेम भग्थय नित्य हर्षान।
कृष्ण शंकर करिथ नालमुतये।। सू.।।
ईक्षन किन कोरुक वार संवाद।
दर्शन आस हर्षानी।
ती वोनुक यी ज़गतस ह्योतये।। सू.।।
शशि लूसित रव खोतमुतये।
प्रव तारकन हन्ज़ चमकान।
शिव नाराण कुनय गोमुतये।। सू.।।
नोन वोन पान यलि हर नय।
बरन्य तार मुचरन आय।
निबर अन्द्र एक भोसमुतये।। सू.।।

वोन्द इन्दरौ मन् फोलमुतयें।
मंध्यानच संधि भासान।
सुब शामन मेल कोरमुतये।। सू०।।
वेद वाणी ईक भाव होवुक।
भोवुक क़स यि सीरि इस्रार।
शाम प्रभात अर्ध म्यूलमुतये।। सू०।।
देव आकाशि पोष वर्षाणी।
अछ रछ मच नचनस गये।
द्राव शम्भो सु आकाश खोतये।। सू०।।
कर्म भूमि धर्मुक सोथ द्युन।
परम पावन मुर्यादा।
भोर ज़गतस तुलनि आमुतये।। सू०।।
दुष्ट दुर्जन नष्ट करनावनि।
भरनावनि सृष्ट आनन्द।
ईश चय छुक जेष्ट मोनमुतये।। सू०।।
रक्षा करिन सिद्धन साधन।
वेद विरुधियन वध करवुन।
शुद्ध धर्मराज अन्द गोमुतये।। सू०।।

नाद लोयुम **तती लोल होतये।**

रासुंक **भास यानि वनि आम।**

सास भास्कर ज़ने **पूरि खोतमुतये।।** सू.।।

भजन नम्बर 9

श्याम रूपै हा ड़ाम्बलो।

सुबह फोलान फोलान वोलो।।

शीश शायन मुकट धारी।

निशी चय भास गरुडासवारी।

ईश निर्वेष पाहि मुरारी।

वेष करान करान वोलो।। सुबह.।।

गूरि शुर्य गाव वछ गूरबाये।

रास खेलनी गोकल आये।

द्रायि चयय पति कमि अभिप्राये।

माय भरान भरान बोलो।। सु.।।

प्रेम दुध थयन छायि ख्यावीत।

मायि नाबद क्षीर खंड ख्यावीत।

चूरि थावत कर कांसि हावीत।

हूर् प्रारान प्रारान बोलो।। सु.।।

साज़ सन्तूर अन् चयानि वेरे।
रन मागुस तमना नेरे।
बाज़ यलि गछि अद मा फेरे।
नाज़ करान करान बोलो।। सु०।
होशि वन्दय कबील क्रोनय।
रोशि करहय पोषि वर्षोनय।
रोशि मति गोस क्या गोय मयोनय।
पोष छावान छावान बोलो।। सु०।।
गोपियन् हन्दि गिन्दन बाजे।
योगियन हन्द् हासरताजे।
माजि ज़ाव कस चिय ह्यूह राजे।
लाज़ रछान रछान बोलो।। सु०।।
खोनि ललवत इकना कुने।
दिख च़ दर्शन वन्दहै मुने।
रुनि जामन जरहाय चूने।
जूनी गिन्दान गिन्दान बोलो।। सु०।।
तारकन मन्ज वन्य दिनी नेरय।
मारकन मन्ज़ पत पत फेरय।

सास भास्कर उनास पारय।

रास गिन्दान२ बोलो।। सु०।।

भजन नम्बर 10

व्ानि दिमहोस बिन्द्राबन सय।

कथ वनसय रटनम जाय।।

समिवी समिवी हा सखियो स्ोख म्ोख दय नोन द्राव।

श्याम् रूपनाल् रटहोन बाल् पानय वनि आव।।

गोपाल ह्यत गोवर्धन सय।। क०।।

लोल् वानी नादा लोयोस पोशिनूल वाद् गोविन्द गो।

नाद् बिन्द तार ज़ीर भम वायोस कृष्ण गोपी सोहमसो।

दक्षिणयन उतरायनसय।। क०।।

मोल माज् बन्ध कबील क्रोनुय त्रावित मान बिय अवमान।

परत पान वार् कुनय ज़ोनुय चिन्मय भाव सुरौ ध्यान।

छ्यस प्रतिज्ञा योग क्षेम दिन्स्य।। क०।।

कोलन पोन्य फयूर कूल्यन थ्रू द्राव वसत अवसवुन बाहन मासन्

वन्द चोल त वोन्द फोल नोव बहार आव

गिन्दान नन्दलाल सीत दासन।

अ्सति थप करहोस रुनि दामनसय।। क.।।

लो्ल् मन्जिले लोलि ललनावोन चूरि थावोन हावोन कस।

गूर करहोस वोद्वि मन्ज सावोन नित्य चावोन प्रेमुक रस।

पान आलवोस नारायनसय।। क.।।

चो़यिशीत लछ ज़ीवहर्पणसय दर्शनसय देवता आय।

मोखत कुल्य खति तिथिस वर्षणसय स्पर्षनसय छि गोपयन माय

ऋषि क्रेषाण आकर्षणसय।। क.।।

प्रेम रासय अथवास करिथय सास भास्कर छु नित्य चमकान।

नाद लायोस हर्ष रस भरिथय सुलि नेरव काफ़िल छु दूरान।

दोह धरि गछि पत लारनसय।। क.।।

भजन नम्बर 11

ओं परवुन हंस ताजदार।

कमि वनकुय जानावार।।

ज़ाल लगिनी सुय अन्का।

माल गन्डहस छुम तमना।

नाल रटहन सुय बालयार। क.।

कोछ ब दिमहय हा कावो।
गछ त वन्तस दियि दर्शन।
वछ़ि वालिन्जि भावस इस्रार। क॰।
पोषि नूलव पोरयि हंसू।
कुकिल बोलान गोविन्द गू।
हर मुख छा किन हरद्वार। क॰।
प्यठ गोषण र्‌टनम जाय।
क्‌ाल पोषण प्ययिमा हाय।
बोन्द होन्दर्यस त रोषि च़लि यार। क॰।
ख़त बो लेखस हटिके रत।
ज़ाविली कत् सत् शोभिदार।
यिपि नतै छ्‌यस ब दावादारा। क॰।
बाल् अनतने दूरिमा काल।
आल जिगरस गयिमै परकाल।
नाल् जाम तस छि ज़रकार। क॰।
हंस पखवय पत लारोस।
प्रारी प्रारोस डड़क व़न।
दोह दरि गछि सोरि लोक चार। क॰।

दर्द सोजुक सन्तूर साज।
सासि परद ग्योव कोसतूर्य राज।
बति ती ती वनान कोल तार। क॰।
भास्कर चेनत सासन मन्ज़।
रुम रुम खास छु भासानी।
ललवुन छुप सुय सीरि इसरार। क॰।

भजन नम्बर 12

लोलि ललवत थावत सुलनावीत।
वोलस सोन श्यांम सुन्दरो सुन्दरो।।
पवनकी नार् तन छसयो नावीत।
छुम वुहान लोल तोन्द्रो तोन्द्रो।
श्रवण शिशि कलि पान शह्लावीत।। व॰।।
रंग रवकन प्रग वथरावीत।
निन्द्रि वुजत राज इन्द्रो इन्द्रो।
केहनो मंगयो गछतम पान हावीत।। व॰।।
हरद ज़रदी पोष फोलनावीत।
पोषनूल मा हन्द्रो हन्द्रो।

गोविन्द गू वखुत परनावीत।। व०।।
नाद लायय वाद् याद् पावीत।
लोल आम कृष्ण गन्द्रो गन्द्रो।
प्रेम दोध थ्यन गछय ख्यावनावीत।। व०।।
रोषि मो रोष होष रावरावीत।
पोष लागय गोन्द्रो गोन्द्रो।
कीन् भावय सीन् मुचरावित।। व०।।
हंस पखवय पान वुफनावीत।
ब्रह्म रन्ध्र मन्द्रिो मन्द्रिो।
सास भास्कर रास खेलनावीत।। व०।।

भजन नम्बर 13

गछत भोम्बर वुछत बेरंग, श्याम रंग आकार छा।
निर्द्वन्द शिव नाद बिन्द छा, सूर्य चन्द्रम तार छा।
दुख चलि सन्मुख वुछहोन, सुख मुख दयव नेरि नोन।
मुख मुख छा गुरु मुख छा, हर मुख छा हर द्वार छा।
वोन्त तस छुन भ्रोन्ति करवुन, सून्तय पज़िहस वातनस।
हरद ज़रदी नवबहार सुय, गुलज़ार छा गुलनार छा।

हारि परबत प्रारि प्रारोस, शंक़राचार्य व्यन दिमोस।
तार सर छ़ा मोर सर छा, खनबल खादनयार छा।
मार मटि छुस पान मोरव, मो मोत नै वाति सोन।
अमार तसिसन्दि नार छु ललवुन, अंगार छा अबखार छा।
देव कारण ऋषि मुनीश्वर, बिन्द्रावन व्यन दिवान।
द्वारिकाय छा मथुराय छा, गोकलै गिरधार छा।
तावनुन बाज़ार यि संसार, खाम सौदो यावनुन।
कर्म फल सूरित छि चल लार, इक़्रार छा इन्कार छा।
बिन्द्रावन नित्य छु गिन्दवुन, श्याम सुन्दर सीत असे।
ध्यान मय छा ज्ञानमय छा, निर्वाण योगाकार छा।
सासनय स्यूत रास खेलान, भासवुन क्षण क्षण छु नोन।
दास प्राराय करि अथवास, भास्कर तीज़दार छा।

भजन नम्बर 14

बहार आव कोन आव दिलदार इम शब।
चलै व्यस गछ वनुस विलज़ार इम शब।।
हीनय गौ अर्न्य रंग लयि लोसं प्रारान।
इम्बरजल चयशम पुर खुमार इम शब।।

दिमव छोह रोव करौ दोह तार गिन्दहौ।
कोलन पोन्य फयूर कुल्यंन सबज़ार इम शब।।
सु रस रस ब्यस च अन्तन हाल भावोस।
तसन्दि हावस म्य छुम वसि नार इम शब।।
च प्रछ़तस म्यानि ज़्यवि अद गोस मा गोस।
वुछोन अछि लोस दर इन्तिज़ार इम शब।।
गनीमत त् यी दम रोज़ि मा कालि।
पगाह मा ह्यटि छुय म्योन मार इम शब।
ह्यामस ज़ाग नागिरायस छ़ागि वालन।
सहोन हीय माल जाहरि मार इम शब।।
करान लेल्ला लेला मस्त मजनून।
ज़िन्दय दर गोर शबि बेदार इम शब।।
म्य गोमुत सूर दूर्यर कोताह ब चालय।
ब छूयस ललवान तिमय अंगोर इम शब।।
रिन्दव ग़िन्दुना करुक ज़िन्द पान मरनुय।
परान मन्सूर अन बर दार इम शब।।
तवै भास्कर दिवान सासन अन्दर नाद।
छु अज़लुक पोन वूयन मिलचार इम शब।।

भजन नम्बर 15

सुदर्शनचक्र हयत नोन नेर धर्मुक शान पैदो कर।
इथिस वक्तस च शक्तिमान तिथि सामान पैदा कर।।
सनातन धर्मची रछ लाज पनून प्रण वार वोन्य पाव याद।
अधर्मच गाल वोन्य बुन्याद सु गार्गी यान पैदा कर।।
गुलन खारन कुनुय माने, अन्यायस न्यायकुय तकरार।
पुण्यस पापस गोमुत यकसान तम्युक अवज़ान पैदा कर।।
कुटम्ब यौवन धनुक मोह मद अनर्थुक यच़ गोमुत अभिमान।
सूर्य प्रच़ड दण्डुक कूप तिमन अवमान पैदा कर।।
परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम।
धर्मे संस्थापर्नाथाय, अद पनुन पान पैदा कर।।
सनातन वेद मर्यादा, ब्रह्मडिस हेरि बोन प्रकटाव।
दुरात्मन दुर्ज़नन होन्द क्षय ब एक आन फान पैदा कर।।
दयानन्द शंकराचार्य महात्मा बुद्ध बिक्रम बीर।
सुवेदान्त ललत प्रवरेश सिन्धेमान पैदा कर।।
गुरु गोविन्द नरसिंह रूप नानक देव शिवाजी।
सिद्धि ऋद्धि हयत सत् ज्ञान सदा सनिदान पैदा कर।।

सन्नक सत ऋषि त व्यास गौतम अगस्त नारद त बयि भरद्वाज।
सनातन वेदकुय प्रकचार क्रिया यौ सान पैदा कर।।
फर्ष प्यठ अर्षसय तामत, सु रोषण गोषणाय करनाव।
रिया कारन सितम गारन, उलट पुल्ठान पैदा कर।।
नवन पीठन अन्दर आडर नवन नाथन हुन्द साम्राज्य।
तमिकि ज़िमवार नव सिद्धि प्रधान हनुमान पैदा कर।।
सरप बद ख़ाह तबिच राम हून्य इथिस समयस तिमन फान कर।।
बुनिल गगारायि त्रट तूफान तलुक प्यट फान पैदा कर।।
यि घट छट छोय कास अन्दकार, प्रत्यक्ष भास सास भास्कर नोन।
बहार हरदचि जरदी हाब हज़ार दास्तान पैदा कर।।

भजन नम्बर 16

कुनि इखनो यावन लोलो।
खुनि ललवत करै ब गूर गूरै लोलो।।
निन्द्रि बेदार करथस त त्राबथम रव।
वनन वनवान च्यै इन्द्रनि हूरै लोलो।।
प्याल भरहै दोह पांशि इत सोलस।
तन व नावै कुंग कोफूरै लोलो।।

शाम रुपस प्यठ च्यै गत करना।
पान आलवै जन पोंपूरै लोलो।।
लोल्य ब क़रहै मोल्य कुनि मेलखना।
आदम ख़ाव अशिकनि चूरै लोलो।
मछि मछ बन्द हचि कुय छुक च बावुट।
मनके चुर कनके दूरै लोलो।।
कम शाहबोज सुन्दर त बियि गोन्दर।
जाल लगिहति छि हूर मस्तूरै लोलो।।
बाज़गारी नाज कम छुक च हावान।
बाज अनहत साज सन्तूरै लोलो।।
सास भास्कर छु परि पूर नित्य चमकान।
तमि नूर दोद कोहि तूरै लोलो।।

भजन नम्बर 17

मधुसूदन शुद्ध दोध चूरै लोलो।
खोनि ललवत करै ब गूर गूरै लोलो।।
मन मोहन वनि कुनि कनि इखना।
मुन्य वन्दहै नन्द किशोरै लोलो।।

प्राण अपान अर्ग़ भर्ग पूज़ करहै।
अहंकार जाल द्वीप कोफूरै लोलो।।
प्रंग वथरै मन क्यन रंग रवकन।
तन ब नावै कुंग कोस्तूरै लोलो।।
नाल रटहत अज़ सोन साल इख़ना।
माल गन्डहै रत्न होन्जरै लोलो।।
कुकिल वनवान वन वन गोविन्द गू।
होषि पोषनूल प्रेम कोस्तूरै लोलो।।
प्रेम साजच आवाज नाद बिन्द तार।
दर्द सोजुक बोज सन्तूरै लोलो।।
धार अवतार भूमि वाल पापुन भार।
मोह कंसस कर चूर चूरै लोलो।।
हिय यावनन्य श्रावण आयि फोलनस।।
गू गू चानि प्रेम भोम्बूरै लोलो।।
हूर वनवान च्यय पत नूर भरथय।
मच मस्तान चश्म मख मूरै लोलो।।
नलि वनमाल हटि त्र्यट त कोस्तभ मन।
शेरि मुकट वाल्य कन्दूरै लोलो।।

सतकुय रास अथ रट चट म अथवास।
सास भास्कर भास पूर पूरै लोलो।।

भजन नम्बर 18

यन छयनन गोख तन छयसयो ब थारान।
छसयो प्रारान द्यव यूरि यिये।।
पत लारन इमन शाह सवारन।
हंस पख़वै वुफ़न ग़ये।
पर लूसिम कर छ्रयस प्रारन।। छ॰
कीत तम्बलावि यमि संसारन।
आय कति सन कोर कुन गये।
जाय वुछनै चा़य अद मज़ारन।। छ॰
व्यसि गिन्दहव नभच्यन तारन।
लोल नारन वस मय जाजिये।
रोब खान प्यठ पोत जूनि छारन।। छ॰
रुम रुम तोस लूसस चा़रन।
ओंकारिन पन म्य खोरमये।
प्राण शुमरथि ध्यान छयसयो ब धारन।। छ॰

नागि राय जन डुन्ग दित छारन।
छागि वालन जागि जागये।
आगर प्यठ सागर फयारन।। छ॰
लोतोन्द्रस तोन्द्रस अन्द्रि संधारन।
जाम स्वर्गिक सुन्दर म्य पारिमये।
तमि नोर नूर लल छ्यस ब हारन।। छ॰
शवन जालित शशि त रव कारण।
शशि कलि हुन्द शेहजार छुये।
तमि गाशि लय त्रनवै कारण।। छ॰
तथ कुनिरस क्या सन्यर विचारन।
सनि खोत सन्य वन्य म्य द्युतमये।
आकाशि प्यठ पाताल फयरिन।। छ॰
खाम सौदा पौखत बाज़ारन।
यावनुन मोख्त मोवोनये।
कम शाह बाज़ बाज़ गय हारन।
सास भास्कर नोन छु गाश धारन।
रात क्रीलन अनि घट छयये।
गाट गाटस घट गाश गारन।। छ॰

भजन नम्बर 19

रुम रुमश्यामाकार।
छान्डोन बिन्द्रावन तलो।।
नाद बिन्द तेज़ ओंकार।
माधव नन्द नन्दन त लो।। रुम०।।
मन मथुरायि आधार।
वथरोस मन्ज़ नेत्रन त लो।।
अत गत ज़न्म ज़न्म भार।
सत किन लगि तथ छ्रयन त लो।। रुम०।।
द्वारिकायि होन्द सु सरदार।
छान्डोन मन्ज़ तारकन त लो।।
हर मोख छा हर द्वार।
नेरोस मन्ज़ मारकन त लो।। रुम०।।
गोकल कुय गुल बहार।
गोपाल सीत गोपियन त लो।।
गोवर्धन गिरि धार।
ननि नोन सु श्याम शामन त लो।। रु०।।

थनि चूर ह्यत गूरि यार।
लूटान गूरि बायन त लो।।
दुध लोट अमृत धार।
चावान स्यूत भाजन त लो।। रु०।।
कंसुन काल संहार।
हंसो ओं ज़पन त लो।।
नाद बिन्द ज़ीर भम साज़।
साधना छन व्यपन त लो।। रु०।।
यि छु तावनुन बाज़ार।
श्रावण तोत कलन त लो।।
यावुन भ्रम बाज़गार।
कलि इम दांद बलन त लो।। रु०।।
समवि शक्ति बाजार।
भक्ति मोखत मोलवन त लो।।
खाम सौदा पोखत कार।
सुधाम लोलि ललवन त लो।। रु०।।
मोर मुकट शोभि दार।

घटि मन्ज़ सूर्य प्रज़लन त लो। रु०।।

हटि त्र्यट माल शोभिदार।

बाल छिस वाल कनन त लो।। रु०।।

श्याम पीतम्बर धार।

अम्भर मलित च़न्दन त लो।।

गम भर तेज अम्भार।

असवुन क्या सु प्रसन्न त लो।। रु०।।

रोनि गोड क्या श्रोनिदार।

नच़नस गछन श्रोन्य त लो।।

मान्ज़ि नम चन्द्रम तार।

मन डोल अछ रछन त लो।। रु०।।

बन्सरी वरद विस्तार।

संसार सोर व्यसरन त लो।।

लोल दित गोल आकार।

नच़नस क्या प्ररसन त लो।। रु०।।

सास भास्कर तेजऋ दार।

चमकान मन्ज़ दासन त लो।।

विकास नोऩ भासन त लो ।। रु०।।

भजन नम्बर 20

गोपाल गोकलो। बोल रास आस गिन्दानी।।
मोहन हा चलो।
काच जून ज़न छिगलानी।
श्रावुण तोत कल्योव।। वो.।।
निर्भय निष्कलो।
कलि कल छम म्य घनानी।
कलि वुज़ि शशिकलो।। वो.।।
शांकल वांकलो।
लोल हांकल न छ्यनानी।
भोम्बरनि ग्रांगलो।। वो.।।
इन्दु रव मन फोलो।
गोविन्द गीत गुन्दानी।
बन्धन मोकलो।। वोल.।।
ग्वाल बाल खेलो।
वछि गाव ह्यथ प्रारानी।
जसोदायि मायि वोलो।। वोल.।।

आयि जिगरस करतलो।
मटि मार मा छुय खसानी।
कर त्राविथ छुस बरतलो।। वोल०।।
थनि चूर डांम्बलो।
यंन छ्रयन गोख तन कोन आख।
मोनि लोस वोन्य वोलो।। वोल०।।
श्याम क़ामकि कोमलो।
रुम रुम राम छु रमानी।
मोखत केश केश रम्बलो।। वोल०।।
दूर्यर सूर मलो।
दोरि दोरि फेरय वनानी।
सन्न गोम यिन चानि बलो।। वोल०।।
वथरै मन मन्जुलो।
व्यास नारद छि तोतानी।
सास भास्कर प्रज़लो।। वोल०।।

भजन नम्बर 21

वेरि तमि सन्ज़ि शेरि प्राण सन्धोरुम।
ध्यान है धोरुम कृष्ण ध्यान है धोरुम।।
नाजनीन पानस सिंगार पोरुम।
परम आकाश म्योन माल्युन।
मोह घटि सु प्रकाशघटि गाश होरुम।। ध्यान०।।
सुबह शाम प्रभात नोन म्य विचोरुम।
रुम रुम चोरुम खोरुम पन।
ओं परनोवुम मोह मद मोरुम।। ध्यान०।।
ज़ीर भम तारि नाद बिन्द स्वर खोरुम।
दशनाद मुरली वाद प्रकट्याव।
राधा कृष्ण कृष्ण वाद उश्चोरुम।। ध्यान०।।
दर्द नयि ओश चालि चालि होरुम।
सत परदः चटिथ्यस हूर बनवान।
अनुग्रह सागर आगर फयोरुम।। ध्यान०।।
देह अभिमान मोह ग्यव ज़न कोरुम।
अहंकार जोलुम रत्न द्वीप।

गोड मानसरंवर हम् हंस धोरुम।। ध्यान०।।

सतचे अथवास रास खेल नोवुम।

सास भास्कर खास भास वनि आम।

अथवास विकास होश विस्तोरुम।। ध्यान०।।

भजन नम्बर 22

अष्ट भोज नारायण कष्ठ करतम दूर।

छ़नथ रुनि मन्जलिस करय गूर गूर।।

ध्रुव सन्दि पाठिन दितम वरदान।

शुक देवनि पाठ्य प्राव निर्वाण।

शक्ति पात अनुग्रह करुम पमरि पूर।। छ०।।

ऋद्धि सिद्ध प्राव सम्पदा।

रोग शोक कास भास नान सर्वदा।

भोग योग संयोग दितम पूरि पूर।। छ०।।

सत वहरि प्यठ चयि पत पत द्रास।

अतः गत जन्म मरनुच हान कास।

मत ना च्य वथ वथ छम भ्य दूर।। छ०।।

वार छुम न नेर फेर मारकन।

तारकन भँज़ गुज़मच ब काचज़ून।
चठ सथ पखु छुन दुसतूर।। छ.।।
सतकुय मस चाव हटस के आगर।
ग्रख लगि भागर सानरस तान्य।
हटस सान तमि मस बन भखमूर।। छ.।।
प्रेम मस खअस्य भूरिम बर्बुक आस।
पास कर पनन्यन टाठयन हुंद।
द्रिय चांन्य छम हा वूसि गोम सूर।। छ.।।
लोलुचि रगि सग फेरि हेरि बुन।
दर्दुचि दगि पय फेरि क्षण क्षण।।
तमि स्नेह रेह छः दज़ान कोहिनूर।। छ.।।
पोशकर नाथ होश दिम गोश थाव।
कल्य च्यानि फिर फिर हजि गुयम कजर।
मुनि लोस वन्य मस हटम दूर दूर।। छ.।।
अथवास रटुम चोन दामन।
सास भास्कर कास मुँह अन्धकार।
गत दिम पथ रछुम नत मल सूर।। छ.।।

भजन नम्बर 23

ज़गथ बीज़ चक्र शोडशडलारमाण न्यथ चक्र पीठस तल
नमन कारण परान मँगल। उमा देवी क्षमा वतसल
मँगल दा सर्वमँगली।। ०।।

प्यमोय पादन त् थवि लादन। क्षमा कर सान्यन अपरादना
च़ कण दार वार, फरियादन। अबल बुल बालनुय नादन।
तवय त्राविथ छि लर बरतल।। ०।।

सनातन धर्मुचिय रछ लाज। नवन पीठन कुनुय सामराज।
च़ स्यध कर पान छख सरताज। छि त्रनुवय लूक च़्य मोहताज
महाराज आदिराज श्रीफल।। ०।।

च़ ऋण रूग भय शूक दूर कर। पनुन अनुग्रह च़ भरपूर कर
च़ क्रूध काम वैरियन सूर कर। च़ भूग यूग ज्ञाण मंजूर कर
च़ समयूग, सम्पदा दित अटल।। ०।।

तुहि माता पिता दाता। तुहि भ्राता ज़गथ माता।
तुहि भक्तयन ति वरदाता। तुहि दुष्टन सदा घाथा।
च़ नन्य भास कास सर्व ग्रहबल।। ०।।

यि माया मूह करतम च़ दूर। चल्यम अज्ञान फोल्यम युथनूर।

गलन काम क्रूध दुर्ज़न चूर। पनञ अनुग्रह च़ कर भरपूर।
तवय दिन राथ छम चान्य कल।। ०।।
फौल्यम अद हृदयि कुय कमल। चल्यम अज्ञाणुचिय ग्राँगला
दज्यम काम क्रूध़ मूह जँगल। वुज़्यम शीखर कला शशिकल।
वज़ान नाद ब्यँद तार निश्चल।। ०।।
भद्रकाली वाजाली नेर। सतुच तलवार ह्यथ वार फेर।
छ कर फुरथसः म कर वोन्य चेर। अन्याय छठ छाय कास अंधेर।
च़ भास सास भास्कर निर्मल।। ०।।

भजन नम्बर 24

ज़गथ बीज़ तीज़ परि पूरण। कुरिथ छख व्याफत चुय होरे बोन।
नभामे च़रण कमलन दोन। क्षमा कर ही उमा दीवी।। ०।।
परात पर पर अपर व्यसतार। छु चाने आसन बासान सार।
दयाये चानि बिन वुस्तार।। ०।।
ऋणन शूकन भयन रूगन। क्षणन मँज छख करान मूचन।
दिवान भूगन त् ब्ययि यूगन।। ०।।
कटाक्षा युद गछ़ख कुरिथुय। दयाये चानि गछ़ तरिथय।
नेत्र छिम लील अशि भरिथुय।। ०।।

पणुन प्रण करत वोन्य चुय याद। दिवान शुर्य लोल हुत्य छिय नाद
च्य रोस कुस बोज़ि सोन फरियाद।। ०।।
करान सृष्टि थरथ त् ब्यथि समहार। त्रिकारण पान छख
आधार। छु चाने अज्ञया अनुसार।। ०।।
तुहि माता पिता भ्राता। गुरु बँधू त् व्ययि दाता।
शुर्यन कुस असि च्य व्यन माता।। ०।।
बरस तल अस्य गँडिथ छिय कर। अबल बालक छि
त्राविथ लर। छ मा आश काँसि हुँज चुय वर।। ०।।
म्य दिम ज़्यव गीत ग्यवय चानि। नृत्य ह्यकि क्याह
वोनिथ वाणी। कराण वीद चोर त्वता चानी।। ०।।
चु पानय पान छख ज़ानान। पनुन महिमा कुस करिमान
ब्रह्मादिक दीव छि तति व्यसरान।। ०।।
यि माया मुह म्य करतम दूर। चलान अँधकार फलान
आसि नूर। बन्यम साक्षात्कार भरपूर।। ०।।
यि गट छ्ठ छाय वोन्य कासतम। प्रत्यक्ष सास भास्कर भासतम।
सदा सत्य किन्य प्रसन्न आसतम।। ०।।

भजन नम्बर 25

भक्तानुग्रहकारिणी। शक्ति त्रलोक धारिनी।
राज्य रयव रानि ब्रारी। श्री राज्ञी क्षमाकार।।
चमकान कूटि रवय। च्यथ गगन त्राव प्रवय।
अनाहद शिव शिवय। बोलवुन छु बूद ऊँकार।। ०।।
द्वादश अर्क वीज़ आकार मुकट सोलह सिंगार।
हढि त्रढि त माल शहमार। सिंहासनस त सवार।। ०।।
च़्यथ रूप तीज़ समव्यथ। स्यध रूप बीज़ असथ्यथ।
आनँद सयँध व्यकस्यथ। प्रखचार यि़ चोऩ सोफार।।०।।
हीं बीज़ कल्लीं बीज़ी। सौ बीज़ शाँत तीज़ी।
राम राज्ञी अबीज़ी। स्वाहा सदा नमस्कार।। ०।।
भक्तयन रछिथ च़्य पथ न्यथ। शकि त्रैलोकी असथ्यथ।
दुर्गी निवार दुर्गथ। दीर्ग रग वोन्य चच निवार।। ०।।
पुन्य पाप कर्म लोनुय। रुव लेख छल च़ प्रोनुय।
मुटि न्याय छुय च्य सोनुय। नोन हाव वोन्य च़ प्रखचार।
ऊँकार वीद गोनुथ। त्रेयि बीद अबीद मोनुथ।
क्याह मान्ये तथ च़्य ज़ोनुथ ज़ाननस कर छुतकरार।। ०।।

निश दिन शरण त्रिकारण। श:शदर लगिथ छि प्रारण।
ऋयष क्रेशुवुन्य व्यच़ारण। प्ऱाराण छि नेंद्र बेदार।।
.काम क्रूध लूभ दुर्जन। गाल पाल वोन्य चु सरज़न।
पर्वथ काल्य छि लरज़न। दीह कुय क्याह छु आधार।। ०।।
चानी दया भवानी। ह्यकि क्या वोनिथ यि वाणी।
अँज़राव न्याय सअनी। गुँजराव छि चान्य शीरखार।। ०।।
नाणा रूफ दारिथ। आर्त्य च़्य सारी तारिथ।
वोन्य वार्य सान्य छि आर्त्य। तार्य क्याह चु धार अवतार।। ०।।
गौरी अगूर दुख कास। गुरु मुख सँमुख बास।
हर मुख छ़ार वुन दास। सास भास्कर चमत्कार।। ०।।
।। ०।। श्री राज्ञी क्षमाकार।। ०।।

भजन नम्बर 26

ललवान सीरी हक,ज़ेरि२, हेरि बोन, छम वज़ान, ज़ीरः बम तार
ह्यस के मयखान, मस यलि ब चोवनस, बोवनम सीरी इसरार।।
आलव तोरय गोख, दरियाव दाम, चोख शोकन कुरुख मिलचार
सतवय आकाश, सतवय पाताल, तल प्यठ दिथ कुनय ठान।।
गाह गट गाह गाश गाह प्रकाश नूरान एकसान सोरि सामान।

रँग२ बेरँग सूरथ सु मूरथ नन्य द्राय दर बाज़ार।
गगनय पवनय लागनय गागनय सथ नय ब्ययि नवद्वार
सुय हज़ार दासतान बोलान नय, नय मुलवान ह्यथ खरीदार
पनुनुय ह्युन ध्युन, पनुनुय बाज़ार, पानय ग्राख, बययि सौदागर।।
हरद, सूँत कुनिरस वोतँ कुनि लुबमस न, दर्दनय फेरि शटहज़ार।
सथ पर्दः चढ़ि थुय हूरः द्रायि वनवान पोशन कुरुखतूमार।
ग्रख लज्य सुदरस दरवाज़ खुल गुये अनुग्रह ध्युतुखअभार।
कँदा पोरय जूनि डबि शशि रव सअविथ नाविथ अँदिर मि तुँदरय प्रान।
गटि मँज़ भास्कर सास बास नाविथ शिव गाश कीशव सु शाँत आकार।।०।।

Lazer Typesetting at : Ashirwad Lazer Graphics, Jammu.
©: 543812 (P.P.)

Supplied by : Surbhi Stationers, Ambphalla Jammu.
©: 576963, 576828